पाठ-3

DJ7ZBY

नदी घाटी की सभ्यताएँ

आज कुछ लोग गाँवों में रहते हैं तो कुछ नगरों (शहरों) में। दोनों ही जगह के रहन-सहन में कुछ-कुछ समानताएँ होती हैं तो कुछ अन्तर भी। क्या आपको पता है कि आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व भी भारत में नगर थे। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन प्राचीन नगरों का निर्माण लगभग आजकल की सुनियोजित नगर-निर्माण योजना की तरह होता था। ऐसा उस समय के अवशेष बताते हैं।

विश्व की प्राचीन नगर सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ। नदी के किनारे होने के कारण खेती के लिए पानी की उपलब्धता ने अधिक अन्न उत्पादन में मदद की जिससे नगरों का विकास सम्भव हो सका। व्यापार के लिए जलमार्ग सुलभ था। नदी मार्ग से व्यापार सस्ता, आसान तथा सुरक्षित था। नगरीय जीवन में कृषि की अपेक्षा काम-धन्धों को अधिक महत्व मिला। इन कामधन्धों के विकास के लिए प्राकृतिक कच्चे माल की उपलब्धता तथा उससे निर्मित वस्तुओं ने नगरीय जीवन को और उन्नत बनाया।

हड़प्पा सभ्यता (लगभग 2500 ई0पू0-1520ई0पू0)

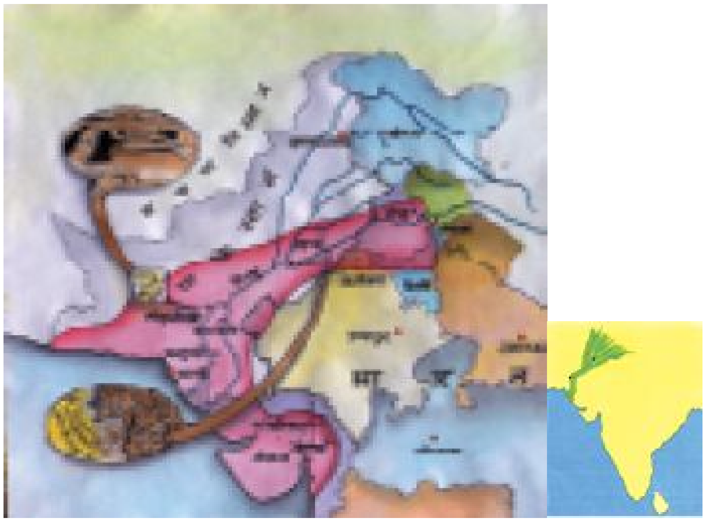

पुराने शहर की खोज

सन् 1921 की बात है जब भारत में अंग्रेजों का राज था। इसी वर्ष पुरातत्वविदों ने पंजाब प्रांत में हड़प्पा नामक स्थल से एक खण्डहर की खोज की। इस खण्डहर के अवशेषों के अध्ययन से पुरातत्वविदों को ज्ञात हुआ कि यह एक नगरीय सभ्यता के अवशेष हैं। इसी प्रकार सिन्ध प्रान्त में एक और गाँव मिला जिसको लोग मोहनजोदड़ो कहते थे। मोहनजोदड़ो का मतलब है - मृतकों का टीला। यहाँ से भी नगरीय सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए क्योंकि यह अवशेष सिन्धु नदी घाटी में प्राप्त हुए थे इसलिए इस सभ्यता को सिन्धु नदी घाटी की सभ्यता भी कहते हैं। हड़प्पा नामक स्थल से इस संस्कृति के अवशेष सबसे पहले मिले थे इसलिए इसे हड़प्पा संस्कृति कहते हैं।

सड़क एवं गलियाँ

पुरातत्वविदों ने इन स्थलों की विस्तृत खुदाई की तो नीचे दबा हुआ पूरा का पूरा शहर निकल आया। लोग नीचे उतर कर उसकी गलियों में घूमने लगे।
उन्होंने देखा कि घरों में उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। मानो आज के घर हों, और शहरों के बीच बनी चौड़ी सड़कें ऐसी हैं जैसे आज शहरों में बनती हैं। इतना बड़ा शहर, यहाँ कितने लोग रहते होंगे ? जब खोजबीन की गई तो पता चला कि यह दबा हुआ शहर बहुत ही पुराना है। आश्चर्य तो तब हुआ जब पता लगा कि यह शहर चार-पाँच हजार साल पुराना है। उस समय यह माना जाता था कि चार पाँच हजार साल पहले लोग खेती करके, पशु पालकर या शिकार आदि करके जीवन यापन करते थे। क्या इतने पुराने समय में भी शहर बन गए थे ? उनके बचे-खुचे निशान देखकर हमें यह जरूर पता लग जाता है कि शिकारी मानव और शुरू के गाँवों की तुलना में शहर के लोगों का जीवन बदल गया था।

शहर ही शहर

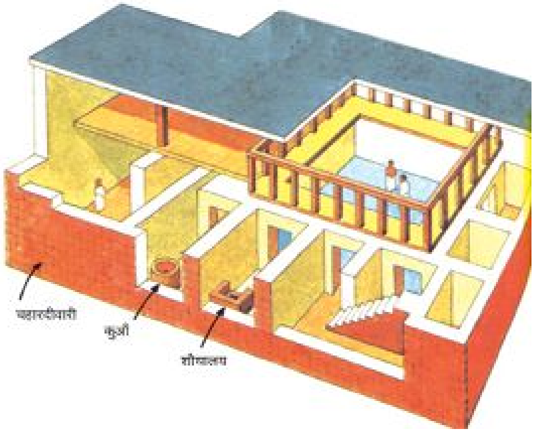

धीरे-धीरे आगे और खोज हुई। कई जगहों पर खुदाई की गई तो पता चला कि उस समय एक नहीं, दो नहीं, कई शहर थे। वे खासकर एक बड़ी नदी और उसमें

मिलने वाली दूसरी छोटी नदियों की घाटी में बसे हुए थे।

इस सभ्यता के कुछ क्षेत्र आज पाकिस्तान देश में आते है लेकिन रोपड़ नाम की जगह भारत के पंजाब राज्य में है, कालीबंगा भारत के राजस्थान राज्य में और लोथल भारत के गुजरात राज्य में है।

सिन्धु घाटी के शहरों की इमारतें

खुदाई करने पर शहरों में कई तरह की बड़ी-बड़ी इमारतें मिलीं, जो आयताकार थीं। कई दो मंजिला घर थे, अमीरों की कोठियाँ थीं, गरीब कारीगरों के छोटे-छोटे घर थे।

चित्र में उन इमारतों की दीवारें देखिए। कितनी ऊँची दीवारें हैं। इन्हें किसी मिस्त्री ने बनाया होगा। दीवारें पकी ईंटों की बनी हुई हैं। इससे पता चलता है कि उस समय ईंट पकाने की भट्टियाँ रही होंगी।

शहर की सड़के गाँव की गलियों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी नहीं थीं। बिल्कुल सीधी-सीधी थीं। पूरा शहर व्यवस्थित था। सड़कों के किनारे पक्की नालियाँ बनी थीं। हर घर की नाली बड़े नालों से मिल जाती थी।

सिन्धु घाटी के शहरों की खुदाई में पक्के घरों के अलावा बड़े-बड़े गोदाम मिले हैं। आसपास के गाँवों से अनाज इकट्ठा करके इन्हीं गोदामों में रखा जाता रहा होगा।

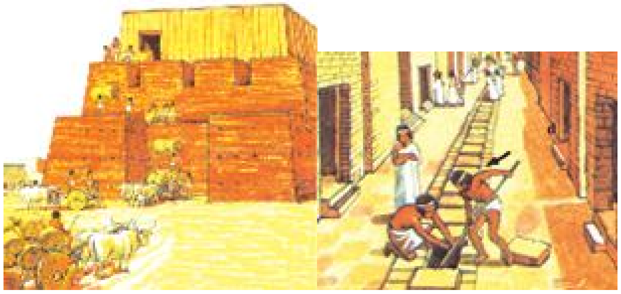

गोदाम, मोहनजोदड़ो नालियाँ साफ करते हुए

सशहर के लोगों को बड़े गोदामों में अनाज भर कर रखने की जरूरत क्यों पड़ी होगी ? सोचें।

घरों और गोदामों के अलावा मोहनजोदड़ों में एक बड़ा सा पक्का स्नानागार मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए थे। इससे पता चलता है कि मोहनजोदड़ों के लोग सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूक थे।

स्नानागार, मोहनजोदड़ो
सोचिए और बताइए
**ऐसा क्यों लगता है कि सिन्धु घाटी के नगर बहुत सोच-विचार कर बनाए गए थे **

काम धंधे

सोचिए ! पत्थर का भाला उन्होंने कैसे बनाया होगा \

पत्थर का भाला

जब लोग पत्थर से औजार व हथियार बना लेते थे तो उन्होंने धातु की चीजें बनाना क्यों शुरू किया होगा ?

खुदाई में ताँबे और काँसे की बनी हुई कुल्हाड़ी, दर्पण, आरी, कंघियाँ, उस्तरा प्राप्त हुए हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सिन्धु घाटी के लोग जमीन में से धातु निकालने और उसे साफ करने तथा गला कर चीजें बनाने के तरीके से परिचित थे।

काँसा- ताँबा और जस्ता को मिलाकर बनाई गई धातु है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि धातु की चीजें बनाने के साथ-साथ लोग पत्थर के औजार भी बनाया करते थे। इसका कारण शायद यह था कि ताँबा व काँसा जैसी धातुएँ, पत्थर की तुलना में बहुत ज्यादा मजबूत नहीं थीं। ये धातुएँ हर जगह आसानी से मिल भी नहीं पाती थीं इसीलिए लोग कई औजार पहले की तरह पत्थर के ही बनाते रहे।
खिलौने की बैलगाड़ी देखिए- लगता है इस समय की बैलगाड़ी है।

इस तार को खींचने से बैल का सिर हिलता है।

जो भी हो, इस बैलगाड़ी में दो बड़ी खोज छिपी है- एक है पहिया व दूसरा है बैलगाड़ी।

सोचकर बताइए कि सिन्धु घाटी के नगर के लिए बैलगाड़ी एक जरूरी चीज क्यों रही होगी ?

आप अपने आसपास किस-किस काम में पहिए या चक्के का प्रयोग देखते हैं ? लिखिए।

उस समय चक्के का इस्तेमाल मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए भी होने लगा था। इसलिए पहले की तुलना में बहुत अच्छे किस्म के बर्तन बनाए जाने लगे थे।

इन चित्रों में दिख रही चीजों से आप अनुमान लगा सकते हैं कि सिन्धु घाटी के नगरों में बहुत से कारीगर रहते थे। नगर के लोग अपनी जरूरत की सब चीजें घर पर नहीं बनाते थे। अलग-अलग चीजों को बनाने वाले अलग-अलग कारीगर थे जो अपनी चीजें बनाकर दूसरों को बेचते थे।

उपर्युक्त चित्रों को देखकर उस समय के कारीगरों की सूची बनाइए ......

व्यापार

सिन्धु घाटी के नगरों से पत्थर, हाथी दाँत, धातु एवं मिट्टी की बनी वस्तुएँ मिली हैं। कुछ विद्वान सोचते हैं कि ये वास्तव में व्यापारियों की मुहरें थीं। ये विभिन्न आकार की हैं। व्यापारी जब एक जगह से दूसरी जगह सामान भेजते थे तो सामान बाँधकर उस पर गीली मिट्टी छापते होंगे और गीली मिट्टी पर अपनी मुहर से छाप बना देते रहे होंगे ताकि उनके सामान की पहचान बनी रह सके। तौल और नाप के लिए बटखरे और पैमाने का प्रयोग करते थे।

ऐसी मुहरें दूसरे देशों में भी पाई गई हैं- खासकर मेसोपोटामिया (इराक) देश में। लगता है कि उन दिनों इराक और सिन्धु घाटी के शहरों के बीच व्यापार होता था।

आइये जानें व्यापार से होने वाले लाभ -

एक दूसरे की जरूरत की और सुंदर, नई-नई चीजें आसानी से मिल जाती हैं।

विचारों का आदान-प्रदान होता है।
दूसरे देशों के विषय में जानकारी होती है।
अतिरिक्त उत्पादन से ही व्यापार सम्भव है।

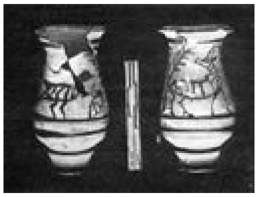

मोहनजोदड़ो में प्राप्त बर्तन

सिन्धु घाटी के लोथल क्षेत्र में मिले बन्दरगाह के अवशेषों से पता चलता है कि ये लोग नदी या समुद्र से व्यापार करते थे। लोथल मुख्यतः व्यापारिक नगर रहा होगा क्योंकि यहाँ से बंदरगाह (गोदी), मुहरें तथा गोदाम के अवशेष मिले हैं।

मोहनजोदड़ो से प्राप्त काँसे की बनी नर्तकी की मूर्ति

वस्तु विनिमय
बच्चों ! जब आप बाजार से कोई वस्तु खरीदते हैं तो दुकानदार को इसके बदले में पैसे देते हैं ? है, ना। अगर दुकानदार पैसा लेने से मना कर दे और कहे कि वह इसके बदले में 1 किलो गेहूँ चाहता है तो आप क्या करेंगे ? सोचिए और लिखिए-

सेलखड़ी में बनी मूर्ति

सिन्धु घाटी के लोग एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तुओं को ले-देकर व्यापार करते थे। वे इसके लिए रुपये या सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे। उस समय रुपये-पैसे का प्रचलन नहीं थाA

मुहरें

वस्तु विनिमय - वस्तु के बदले दूसरे की वस्तु का लेना और देना

लिखावट

सिन्धु घाटी के नगरों से जो मुहरें प्राप्त हुई हैं उन पर आदमी की आकृतियाँ, कुछ पर जानवरों की, पौधों की और कुछ पर बर्तनों की आकृतियाँ बनी हुई हैं।

इन आकृतियों के अलावा इन मुहरों पर क्या बना है ? इसे अपनी कॉपी पर उतारिए। आपके अनुसार यह क्या संकेत हो सकता है? आप भी मिट्टी की मुहरें बनाइये।

इन मुहरों पर संकेत के रूप में लेख लिखे हैं जिससे उनके अक्षर चित्रों जैसे लगते हैं। विद्वान आज भी इस लिखावट को नहीं पढ़ पाए हैं इसलिए सिन्धु घाटी सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक युग के अन्तर्गत रखते हैं। खुदाई से मिले अवशेषों के आधार पर ही हम इस सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।

देवी-देवता

मातृदेवी

इस मूर्ति को देखिए सम्भवतः यह मिट्टी की मूर्ति उन लोगों की देवी की मूर्ति थी। पत्थर के चौकोर पट्टे पर एक आकृति के सिर पर भैंसे के सींग का चित्र है। उसके चारों तरफ कई जानवर बने हैं। यह कोई देवता होगें। सम्भवतः सिन्धुवासी इन्हें पशुओं का देवता मानकर पूजते थे।

गहनें

इस मुहर पर कौन से जानवर दिख रहे हैं? बताइए। इसके अलावा कुछ मुहरों पर पीपल की पत्तियाँ और साँप की आकृतियाँ जैसी भी बनी मिली हैं। शायद वे इन सबकी पूजा करते थे। इन बातों का हम अन्दाजा लगा सकते हैं, पक्की तरह से नहीं कह सकते।

ऊपर बताई गई किन-किन चीजों को आज भी लोग मानते हैं ? इन चीजों को मानने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं ? सोचिए।

शहरों का खत्म होना

देवता

आज से चार-पाँच हजार साल पहले सिन्धु घाटी में नगर बने हुए थे। ये नगर लगभग एक हजार साल तक बने रहे, फिर किसी कारण से नष्ट हो गए और मिट्टी

में दब गए। क्या कारण हो सकते हैं- बाढ़, भूकम्प, महामारी, आक्रमण, आग या फिर आर्यों का आना।

सिन्धु घाटी के नगरों के खत्म होने के बाद कई सौ सालों तक भारत में कोई नगर नहीं बसे।

और भी जानिए

हड़प्पा सभ्यता के निवासी बहुत शान्तिप्रिय थे क्योंकि यहाँ से लड़ाई के अस्त्र-शस्त्र बहुत ही कम संख्या में मिले हैं।

यह सभ्यता काँस्य युगीन सभ्यता थी।

सिन्धु सभ्यता विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है तथा यह भारत की पहली नगरीय सभ्यता थी।

सबसे पहले कपास पैदा करने का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को है। सिन्धु घाटी के लोग सूती कपड़ों का प्रयोग किया करते थे।

सभी भारतीय लिपियाँ बाएँ से दाएँ लिखी जाती हैं लेकिन हड़प्पा की लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।

सभ्यता-मानव सभ्य तब कहा जाता है जब वह अपने जीवन के तरीके को बदल देता है और पुराने रीति-रिवाजों से आधुनिक रीति-रिवाजों को अपनाकर नयी स्थिति में पदार्पण करता है|

योजना-किसी कार्यक्रम को सम्पन्न करने से पूर्व उसकी रूपरेखा तैयार करना।

व्यापार-उत्पादित वस्तुओं को एक जगह से दूसरे जगह भेजकर अतिरिक्त लाभ कमाना जिससे उत्पादन में और अधिक वृद्धि हो सके।

ई0पू0-ईसामसीह के जन्म से पहले का समय।

शताब्दी-सौ वर्ष का समय। जैसे सन् 2002 को 21वीं शताब्दी कहेंगे।

विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ

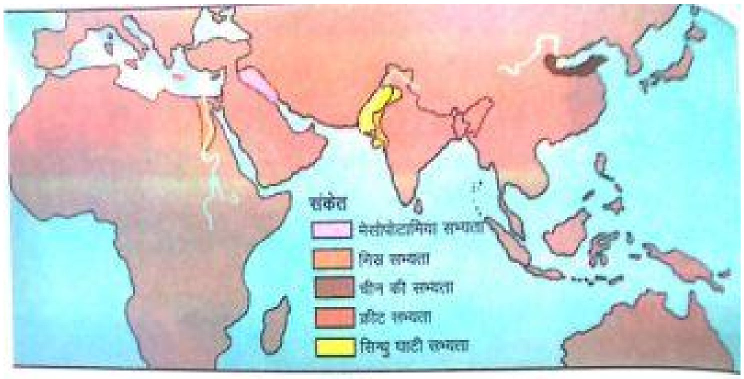

मेसोपोटामिया सभ्यता–

५०००ई०पू०–२०००ई०पू० यह सभ्यता दजला–फरात नदी के किनारे विकसित हुई। जिगुरत में इनके प्रमुख देवता निवास करते थे। इनकी लिपि चित्रात्मक थी।

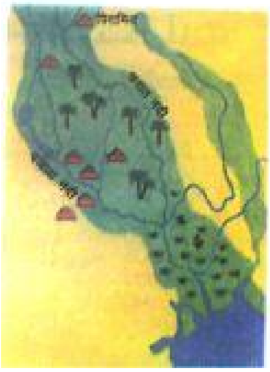

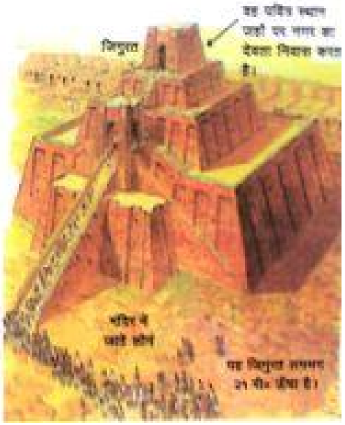

मिस्र सभ्यता–

नील नदी का वरदान (५०००ई०पू०–२०००ई०पू०) मिस्रवासी शवों के शरीर पर नाइट्रोन नामक पदार्थ का लेप लगाकर उसे पतले एवं मुलायम कपड़े से ढक देते थे। इस प्रकार के शरीर को ममी कहते हैं। इनको पिरामिड के अन्दर रखा जाता था।

पिरामिड मिस्र के राजाओं के मकबरे हैं इनमें शवों के साथ–साथ प्रयोग में आनेवाली इनकी बहुमूल्य वस्तुओं को भी रखा जाता था। इन पिरामिडों की दीवारों पर कई प्रकार के सुन्दर चित्र हैं जिनसे मिस्र की सभ्यता से सम्बन्धित कई प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है।

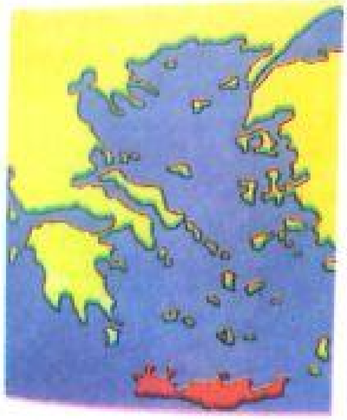

क्रीट सभ्यता–

महान द्वीप सभ्यता ३०००ई०पू० १५००ई०पू० यह सभ्यता भूमध्य सागर के किनारे विकसित हुई थी। सुन्दर चित्रकारी के कारण यहाँ के बर्तनों की माँग दूसरे देशों में भी थी।

चीन सभ्यता– लगभग २५०० ई०पू०

यह सभ्यता ह्वांगहो नदी के किनारे विकसित हुई। सॉटन के कपड़े तथा बाँस पर लिखना सबसे पहले चीन ने शुरू किया। कागज का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में हुआ।

चीनी लोग कांस्य के बने बर्तनों में भोजन करते थे।

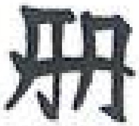

चीनी अक्षर में लिखा हुआ शब्द, किताब

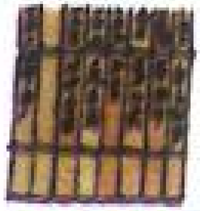

बाँस की बनी चीनी किताब

अभ्यास

1. निम्नलिखित में सही विकल्प पर सही का निशान (✓) लगाइए :

(अ) सिन्धु घाटी की सभ्यता थी–

क. ग्रामीण सभ्यता।

ख. नगरीय सभ्यता।

ग. अर्द्धनगरीय सभ्यता।

(ब) मोहनजोदड़ो के नगर बसे थे–

क. आजकल के गाँवों की तरह।

ख. टेढ़ी–मेढ़ी गलियों में।

ग. एक निश्चित योजना के अनुसार।

2. रिक्त स्थान भरिए–

क. मोहनजोदड़ो का अर्थ .... है।

ख. रोपड़ भारत के .... राज्य में, कालीबंगा .... राज्य में है।

ग. व्यापार .... और सिन्धु घाटी के शहरों के बीच होता था।

3. सही जोड़े बनाइए–

(क)	रोपड़	गुजरात
(ख)	कालीबंगा	महाराष्ट्र
(ग)	लोथल	राजस्थान
(घ)	दायमाबाद	पंजाब

4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए–
   - (क) कांसे की बनी नर्तकी की मूर्ति कहाँ से प्राप्त हुई है ?
   - (ख) हड़प्पा के लोगों का विदेश व्यापार किस देश के साथ होता था ?
   - (ग) कागज का अविष्कार सर्वप्रथम कहाँ हुआ ?
   - (घ) कौन सी सभ्यता 'नील नदी का वरदान' नाम से प्रसिद्ध है ?

5. मानचित्र देखकर हड़प्पा कालीन पुरास्थलों की सूची बनाइए।

6. टिप्पणी लिखिए–
   - हड़प्पा कालीन नगर निर्माण योजना
   - हड़प्पा कालीन व्यापार
   - हड़प्पा कालीन रहन–सहन
   - हड़प्पा कालीन खेती–बेतला

7. सिन्धु घाटी के नगरों के बारे में लोगों को कैसे पता चला ? हड़प्पा सभ्यता के नष्ट होने के क्या कारण हो सकते थे ?

8. किन कारणों सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे हुआ ? (नदियों से विशेष लाभ क्या थे ?)

9. निम्नलिखित तालिका पूरी करिए–

सभ्यता का नाम	नदी/सागर का नाम	मुख्य योगदान
मेसोपोटामिया सभ्यता		
मिस्र की सभ्यता		
क्रीट सभ्यता		
चीन की सभ्यता		
सिन्धु घाटी की सभ्यता		

10. सिन्धु घाटी के नगरों से मिलने वाली मुहरों के बारे में चार मुख्य बातें बताइए।

प्रोजेक्ट वर्क

- नदियों से क्या–क्या लाभ होते हैं ? अपने प्रदेश की मुख्य नदियों के किनारे बसे नगरों की सूची बनाइए।
- आपके घर में मिट्टी से बनी भिन्न–भिन्न वस्तुओं का प्रयोग होता होगा। उन वस्तुओं की सूची बनाएं। यह भी पता करें कि इन वस्तुओं को कौन बनाता है ?